bihar board 9th class hindi notes Chapter 9 रेलयात्रा

लेखक – परिचय

-शरद जोशी

रेलयात्रा

शरद जोशी का जन्म मध्यप्रदेश के उज्जैन शहर में 21 मई , 1931 ई , को हुआ । इनका बचपन कई शहरों में बीता । कुछ समय तक सरकारी नौकरी में रहने के बाद इन्होंने लेखन को ही आजीविका के रूप में अपना लिया । इन्होंने आरंभ में कुछ कहानियाँ लिखीं फिर पूरी तरह व्यंग्य लेखन ही करने लगे । इन्होंने व्यंग्य लेख , व्यंग्य उपन्यास , व्यंग्य कॉलम के अतिरिक्त हास्य – व्यंग्यपूर्ण धारावाहिकों की पटकथाएँ और संवाद भी लिखे । हिंदी व्यंग्य को प्रतिष्ठा दिलानेवाले प्रमुख व्यंग्यकारों में शरद् जोशी भी एक हैं । 1991 ई . में इनका देहांत हो गया । शरद जोशी की प्रमुख व्यंग्य कृतियाँ हैं – परिक्रमा , किसी बहान , जीप पर सवार इल्लियाँ तिलस्म , रहा किनारे बैठ , दूसरी सतह , प्रतिदिन । दो व्यंग्य नाटक – अंधों का हाथी और एक था गधा । एक उपन्यास – मैं केवल मैं , ऊर्फ कमलमुख बी.ए. । शरद जोशी की भाषा अत्यंत सरल और सहज है । मुहावरों और हास – परिहास का हल्का स्पर्श देकर इन्होंने अपनी रचनाओं को अधिक रोचक बनाया है ।

कहानी का सारांश

' रेल यात्रा ' विख्यात व्यंग्यकार शरद जोशी को व्यंग्य रचना है । शरद जोशी के व्यंग्य तिलमिला कर रख देने वाले होते हैं । इस रचना में उन्होंने भारतीय रेल की दुव्यवस्था का वर्णन करने के साथ भारतीय समाज और व्यवस्था की पोल भी खोली है । सभी कभी न कभी रेल यात्रा करते हैं और इस दौरान होने वाली परेशानियों से परिचित भी हैं पर लेखक ने इस रचना में उन परेशानियों का ऐसा चित्रण किया है कि वे हृदय में हल जाते हैं ।

अक्सर भारत सरकार के रेल मंत्री दावा करते हैं कि भारतीय रेल तेजी से उन्नति कर रहा है । लेखक इस दावे की हँसी उड़ाते हुए कहता है कि मुंबई से उसका दिल्ली आना ही प्रगति है और कहीं तो प्रगति दिखाई ही नहीं दे रही है ।

भारतीय रेल की यात्रा दुर्गति भरी होती है । तभी तो इस छोटी सी रोजमर्रा की बात के लिए हम ईश्वर से सफल करने की प्रार्थना करते हैं । रेल यात्रा में भीड़ ही भीड़ मिलती है । इसमें यात्री के ऊपर समान रहता है तो कहीं समान के ऊपर यात्री रहते हैं । रेल प्रशासन को इससे कहीं कोई मतलब ही नहीं रहता है । मानो उसका काम सिर्फ लोगों को एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाना है , चाहे इसके लिए लोगों को बोरा में भर कर ले जाना पड़े यात्रियों के सुख – सुविधाओं से उसे कुछ लेना – देना ही नहीं है ।

आरक्षण करा लेने से रेल यात्रा सुखद हो जाती है पर यदि कभी बिना आरक्षण के यात्रा करनी हो तो दुर्दशा हो जाती है । रेल में चढ़ने की जगह नहीं होती है समान रखने बैठने की बात तो दूर है । लेखक मुम्बई के लोकल ट्रेनों में होने वाली फजीहत को याद करता है ।

यहाँ के ट्रेनों का कोई टाइम नहीं होता है । वे अक्सर लेट चलती हैं । कहीं रूक जाती हैं । पटरी से उतरना उनका आम बात है । ट्रेन दुर्घटनाएँ भी प्राय : होते रहती हैं । भीड़ में ऊँघते यात्री – एक – दूसरे से टकराते रहते हैं । कोई पायदान पर लटक यात्रा करता |

https://www.evidyarthi.in/